भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2022/48

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर द्वारा संस्थान की 25 वीं अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक का आयोजन

आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर की 25 वीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक 08 और 09 सितम्बर, 2022 को आयोजित की गई। हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर के पूर्व कुलपति डॉ एस.के. शर्मा की अध्यक्षता में गठित इस समिति में देश के शीर्ष वैज्ञानिक डॉ के.आर कौंडल (भूतपूर्व निदेशक, राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली), डॉ ओ.पी. शर्मा (पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली), डॉ टी. के. आद्या (पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय चावल अनुसन्धान संस्थान, कटक) के साथ-साथ भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ संजीव गुप्ता समेत आईसीएआर-आईआईएसआर इंदौर के तीनों विभागों के अध्यक्ष डॉ संजय गुप्ता, डॉ महावीर प्रसाद शर्मा एवं डॉ बी.यु.दुपारे सहित सभी वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लिया।

इस बैठक के प्रारंभ में संस्थान के प्रभारी निदेशक, डॉ संजय गुप्ता ने संस्थान की उपलब्धियां प्रस्तुत करते हुए बताया गया की भारत की सबसे लोकप्रिय सोयाबीन किस्म जे.एस. 335 को संस्थान के वैज्ञानिकों के सतत प्रयासों से पीली मोज़ैक बीमारी से मुक्त कर लिया गया है, साथ ही 60 प्रतिशत तक ओलिक अम्ल युक्त सोयाबीन का विकास भी संस्थान द्वारा कर लिया गया है। उन्होंने यह भी बताया की संस्थान द्वारा सोयाबीन की नयी किस्मों के बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु संस्थान द्वारा 3S1Y परियोजना प्रारम्भ की गयी है, जिससे मात्र एक साल की अवधि में किसानों को सीमित मात्रा में नवीनतम गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध करवाए जाने का प्रयास किया जा रहा है। बैठक में अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ एस.के. शर्मा ने अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा की सोयाबीन में फोटोथर्मल इंसेन्सिटिविटी के ऊपर अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों के लिए विभिन्न संस्थानों के साथ सहकार्यता की आवश्यकता है साथ ही संबंधित वैज्ञानिकों की कार्यक्षमता में वृद्धि

हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने चाहिए। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित भा.कृ.अनु.प के सहायक महानिदेशक (तिलहन व दलहन) डॉ संजीव गुप्ता ने बताया की उत्तर भारत में धान-गेहू आधारित फसल प्रणाली में सोयाबीन को सम्मलित कर के फसल विविधता को बढ़ावा देने हेतु उपयुक्त सोयाबीन किस्मों का विकास किया जाना चाहिए , साथ ही सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक, आयरन, मॉलिब्डेनम तथा सल्फर की पूर्ती हेतु उपाय तथा योजना बनाने की आवश्यकता बतायी। समिति ने संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट तथा अनुसंधान परियोजनाओं की सूची एवं साथ ही पिछले वर्ष की उपलब्धियों का अवलोकन कर संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। इसके पूर्व समिति के सचिव डॉ. एम.पी. शर्मा द्वारा पिछली बैठक की सिफारिशों पर कार्रवाई प्रस्तुत की गई तथा वर्तमान में विभिन्न विषयों की परियोजनाओं की प्रमुख अनुसंधान उपलब्धियों को भी दर्शाया गया जिसमे फसल सुधार, फसल उत्पादन और फसल संरक्षण अनुभागों के कार्यों की समिति द्वारा सराहना की गई। बैठक के दुसरे दिन समिति द्वारा ग्राम उमरीखेडा स्थित प्रगतिशील कृषक श्री देवराज पाटीदार जी के खेतों का भ्रमण कर संस्थान द्वारा विकासित सोयाबीन किस्में NRC 130, NRC 138, NRC 142 तथा जैविक सोयाबीन उत्पादन के खेत पर चर्चा कर प्रतिक्रियाओं का मूल्याङ्कन किया.

.....